· दबाव समूहों का वर्गीकरण (Classification of Pressure Groups)

1. दबाव समूहों का वर्गीकरण उद्देश्य की दृष्टि से - उद्देश्य की दृष्टि से दबाव समूह को स्वार्थी और लोकहितकारी वर्गों में रखा जा सकता है। श्रमिक संघ, व्यापारी संघ आदि वर्ग विशेष के हितों की साधना करते हैं, अतः उन्हें स्वार्थी समूह कहा जाता है, दूसरी ओर यों सेवा संघ, भारत सेवक संघ या नारी कल्याण संघ लोकार्थी समूह या लोकहितकारी समूह कहे जाते हैं।

2. दबाव समूहों का वर्गीकरण संगठन की दृष्टि से - संगठन की दृष्टि से समूहों के दो भेद बताये जाते हैं: औपचारिक और अनौपचारिक। औपचारिक समूह वे होते हैं जिनके संगठन का कोई विधान और निश्चित कार्य-प्रणाली होती है, विधान और निश्चित कार्य प्रणाली से रहित समूह अनौपचारिक समूह कहे जाते हैं।

3. अस्तित्व की अवधि की दृष्टि से अल्पकालिक समूह और दीर्घकालिक समूह होते हैं।

4. कार्य-क्षेत्र के आधार पर जो समूह अत्यन्त सीमित क्षेत्र में कार्य करते हैं, उन्हें 'स्थानीय' तथा जिनका क्षेत्र अखिल देशीय होता है, उन्हें 'देशव्यापी समूह' कहते हैं।

ब्लौण्डेल के अनुसार, प्रमुख रूप से दो प्रकार के दबाव समूह होते हैं, प्रथम सामुदायिक दबाव समूह और द्वितीय संघात्मक दबाव समूह। वे समूह जिनकी स्थापना के मूल में व्यक्तियों के सामाजिक सम्बन्ध होते हैं, सामुदायिक दबाव समूह कहे जाते हैं तथा वे समूह जिसकी स्थापना के पीछे किसी विशिष्ट लक्ष्य की प्राप्ति प्रेरक तत्व होता है, संघात्मक समूह कहे जाते हैं।

Avinash

Scanned with CamScanner

आमण्ड एवं पॉवेल के अनुसार, दबाव समूहों के निम्नलिखित रूप हैं।

(i) संस्थात्मक दबाव समूह (Institutional Pressure groups)- ये दबाव समूह, सरकार या संस्थाओं के भाग होते हैं। इसमें राज्य के विभागों (जैसे- विधायिका, कार्यपालिका, नौकरशाही तथा न्यायपालिका) को दबावकारी समूहों की श्रेणी में सम्मिलित किया जाता है। उदाहरण - नौकरशाही के अधिकारी मंत्रियों को प्रभावित कर सकते हैं और फिर ऐसा निर्णय लिया जा सकता है जिससे प्रशासकों के हितों की सुरक्षा तथा इनका संवर्द्धन हो। ये ज्यादा अनौपचारिक होते हैं।

(ii) संघात्मक दबाव समूह (Associational Pressure groups)- संघात्मक दबाव समूह हितों की अभिव्यक्ति के विशेषीकृत संघ होते हैं। इनकी मुख्य विशेषता अपने विशिष्ट हितों की पूर्ति करना होता है। इनमें प्रमुख हैं: व्यावसायिक संगठन, कृषक संगठन, श्रमिक संगठन और सरकारी कर्मचारियों के संगठन, आदि। ये औपचारिक ढंग से गठित तथा अधिकांशतः पंजीकृत निकाय होते हैं जिनके अपने विधान, गठन के नियम, पूंजी, गतिविधियों का लेखा-जोखा आदि होते हैं। ये दबाव समूह द्वितीयक सामाजिक समूह कहलाते हैं। इनका निर्माण व्यक्ति अपने हितों की पूर्ति के लिए करते है। अतः ये जन्म के आधार पर निर्मित नहीं होते। संघात्मक दबाव समूह, पूरे विश्व में सर्वाधिक शक्तिशाली है। पुनः इन दबाव समूहों में व्यावसायिक संगठन सबसे ज्यादा शक्तिशाली हैं।

(iii) असंघात्मक दबाव समूह (Non-associational Pressure groups)- इन समूहों का निर्माण जन्म, जाति या धर्म के आधार पर होता है। ये जनजातीय या नृजातीय समूहों से संबंधित होते हैं।

Avinash

असंघात्मक दबाव समूह अनौपचारिक तथा सामान्यतया असंगठित होते है। यह दबाव समूह विकासशील देशों में ज्यादा प्रभावी होते हैं। हालांकि यह दबाव समूह इटली व आयरलैण्ड जैसे विकसित देशों में भी अत्यधिक प्रभावी है। पुनः इन निकायों का अस्तित्व अस्थिर होता है। वे समय-समय पर प्रकट तथा विलुप्त होते रहते हैं, अर्थात् जब कोई महत्वपूर्ण मामला प्रस्तुत हो, तो वे प्रकट हो जाते हैं।

सामान्य बोलचाल में असंघात्मक समूहों को परम्परागत और संघात्मक समूहों को आधुनिक दबाव समूह कहा जाता है।

(iv) प्रदर्शनकारी या अनियमित दबाव समूह (Anomic Pressure Groups) – प्रदर्शनकारी समूह वे हैं जो अपनी मांग को लेकर गैर-संवैधानिक उपायों का प्रयोग करते हुए प्रदर्शनकारी विरोध और प्रत्यक्ष कार्यवाही का मार्ग अपनाते है। इस प्रकार की कार्यवाही के कई रूप हैं, जैसे - जन सभाएँ, बैठक, रैली, विरोध दिवस मनाना, धरना, हड़ताल, सत्याग्रह, अनशन, अग्निदाह, घेराव, सार्वजनिक सम्पत्ति को हानि पहुँचाना इत्यादि। इन तरीकों के माध्यम से ये गुट शासन के ढाँचे, नीति और कार्य संचालन को भी प्रभावित करते हैं। पुनः इनके व्यवहार के विषय में पूर्वानुमान करना संभव नहीं है। वे क्रोधी बच्चों की तरह क्षणिक आवेश में आकर कुछ भी कर सकते हैं। ये दबाव समूह अकस्मात् एवं अचानक उत्पन्न होते हैं व समस्याओं के समाधान के पश्चात् विलुप्त हो जाते हैं। ये बिल्कुल अनौपचारिक होते हैं। छात्र व युवा संगठन तथा उग्रवादी संघ इस श्रेणी के प्रमुख उदाहरण हैं।

Email- avibasingh@gmail.com Avinash